* R E - 3 1 0 0 - 0 1 / 1 0 0 0 *

RE-3100-01

M. A. (Part - I) Examination

April / May – 2010

Hindi : Paper - II

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : 3 Hours] [Total Marks :

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 2**

☛ Subject Code No. : **3 1 0 0** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१ ''संदेश–रासक एक विरह काव्य है ।'' स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

१ ''कवितावली समय–समय पर लिखे गये पदों का संकलन है ।'' सिद्ध कीजिए ।

२ ''कबीर ने धार्मिक दंभ एवं सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए, विशुद्ध धर्म का प्रतिपादन किया है ।'' इस विधान को सोदाहरण समझाइए ।

अथवा

२ स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि के रूप में घनानंद के कवित्तों का मूल्यांकन कीजिए ।

३ 'पद्मावत' में निरूपित प्रकृति–चित्रण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

३ ''मीरां की वेदना में अथाह विश्वास और आत्म–समर्पण की भावना झलकती है ।'' इस कथन की सार्थकता बताइए ।

४ किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) 'घनान्द कवित्त' में वाक्चातुर्य ।

(ख) 'पद्मावत' की भाषा–शैली ।

(ग) 'कवितावली' का बालकाण्ड ।

(घ) मीरां की गीतिकला ।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(१) ''पुर तै निकझीं रघुबीर, बधू,
धरि धीर दये मग में डग द्वै ।
झलकीं भरि भाल कनी जल की,
पुट सूखि गए मधुराधर वै ॥
फिरि बूझती है ''चलनो अब केतिक,
पर्णकुटी करिहौ कित है ?''
तियकी लखि आतुरता पियकी,
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ॥''

अथवा

(१) ''घेर घबरानी उबरानी हो रहति घन–
आनँद आरति–राती साधन मरति हैं ।
जीवन अधार जान–रूप के अधार बिन
व्याकुल बिकारभरी खरी सु जरति हैं ।
यतन–जतन तें अनखि अरसानी बीर
प्यारी पीर भीर क्यौ हूँ धीर न धरति हैं ।
देखियै दसा असाध अँखियाँ निपेटनि की
भमझो बिथा पै नित लघन करति हैं ।।''

(२) ''हीरामनि देइ बचा कहानी । चला जहाँ पद्मावति रानी ॥
राजा चला सँवरि सो लता । परबत कहँ जो चला परबता ॥
का परबत चढ़ि देखौ राजा । ऊँच मँडप सोने सब साजा ॥
अमृत सदाकर फरे अपूरी । औ तहँ लागि सजीवन मूरी ॥
चौमुख मंडप चहूँ कवारा । बैठे देवता चहूँ दुवारा ॥
भीतर मंडप चारि खंभ लागे । जिन्ह दै छुए पाप तिन्ह भागे ॥
संख घंट घन बाजहिं सोई । औ बहु होम जाय तहँ होई ॥
महादेव कर मंडप, जग मानुस तहँ आव ।
जस छींछा मन जेहि के सौ तैसे फल पाव ॥''

अथवा

(२) ''म्हाँरो प्रणाम बाँके बिहारी जी ।
मोर मुगट माथ्याँ तिलक बिराज्याँ, कुण्डल अलकाँकरी जी ।
अधर मधुर घर बंसी बजावाँ, रीझ रिझावाँ ब्रज नारी जी ।
या छब देख्याँ मोह्याँ मीराँ, मोहन गिरवरधारी जी ।''